संस्कार

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

द्विजों को परलोक और इस लोक में पवित्र करने वाला गर्भाधान आदि शरीर का संस्कार वेदोक्त पवित्र कर्मों के द्वारा करना चाहिए-

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च।।

गर्भ में बीज रूप में प्रवेश करने के कारण प्राक्तन पापों के सिवाय बीजादि के संसर्ग का दोष भी प्रविष्ट हो जाता है जिसकी शुद्धि जातकर्मादि संस्कार (जातकर्म, मुण्डन, उपनयन) तथा हवन से होती है-

गार्भैर्होमजातकर्मचौडमौञ्जीनिबन्धनैः।
बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते।।

नालच्छेदन से पहले पुरुष के जातकर्म संस्कार का विधान किया गया है। उस समय गृह्यसूत्रों के लिखे मन्त्रों के अनुसार बालक को शहद तथा घृत एवं सुवर्ण की शलाका चटाने का विधान है-

प्राङ्नाभिवर्धनात्पुंसो जातकर्म विधीयते।
मन्त्रवत्प्राशनं चास्य हिरण्यमधुसर्पिषाम्।।

बालक का नामकरण संस्कार द्वादशी तिथि को या दशमी तिथि को पवित्र तिथि में और पवित्र मुहुर्त तथा गुणयुक्त नक्षत्र में करना चाहिए-

नामधेयं दशम्यां तु द्वादश्यां वाऽस्य कारयेत्।
पुण्ये तिथौ मुहूर्ते वा नक्षत्रे वा गुणान्विते।।

ब्राह्मण का नाम शुभत्व-श्रेष्ठत्व भावबोधक शब्दों से (जैसे-ब्रह्मा, विष्णु, मनु, शिव, अग्नि, वायु, रवि आदि) रखना चाहिए। क्षत्रिय का नाम बल-पराक्रम-भावबोधक शब्दों से (जैसे-इन्द्र, भीष्म, भीम, सुयोधन, नरेश, जयेन्द्र, युधिष्ठिर आदि) रखना चाहिए। वैश्य का नाम धन-ऐश्वर्य भाव-बोधक शब्दों से

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

(जैसे-वसुमान, वित्तेश, विश्वम्भर, धनेश आदि) और शूद्र का रक्षणीय, पालनीय भावबोधक शब्दों से (जैसे-सुदास, अकिञ्चन) नाम रखना चाहिए। अथवा ब्राह्मण का नाम शर्मवत्=कल्याण, शुभ, सौभाग्य, सुख, आनन्द, प्रसन्नता भाव वाले शब्दों को जोड़के रखना चाहिए (जैसे-देवशर्मा, विश्वामित्र, वेदव्रत, धर्मदत्त आदि)। क्षत्रिय का नाम रक्षक भाव वाले शब्दों को जोड़कर रखना चाहिए (जैसे महीपाल, धनञ्जय, धृतराष्ट्र, देववर्मा, कृतवर्मा)। वैश्य का नाम पुष्टि-समृद्धि द्योतक शब्दों को जोड़कर (जैसे धनगुप्त, धनपाल, वसुदेव, रत्नदेव, वसुगुप्त) और शूद्र का नाम सेवकत्व भाववाले शब्दों को जोड़कर रखना चाहिए (जैसे-देवदास, धर्मदास, महीदास)-

मङ्गल्यं ब्राह्मणस्य स्यात्क्षत्रियस्य बलान्वितम्।
वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य तु जुगुप्सितम्।।
शर्मवद्ब्राह्मणस्य स्याद्राज्ञो रक्षासमन्वितम्।
वैश्यस्य पुष्टिसंयुक्तं शूद्रस्य प्रेष्यसंयुक्तम्।।

स्त्रियों का नाम सुख से उच्चारण करने योग्य, सुगमार्थी, प्रकट अर्थवाला, मनोहारी (जिसके उच्चारण से चित्त प्रसन्न हो), मंगलयुक्त, जिसके अन्त में दीर्घवर्णयुक्त तथा जिसके उच्चारण से आशीर्वाद का बोध हो ऐसा रखना चाहिए। यथा सुभद्रा, निर्मला, सुखदा, विमला, यशोदा आदि-

स्त्रीणां सुखोद्यमक्रूरं विस्पष्टार्थं मनोहरम्।
मङ्गल्यं दीर्घवर्णान्तमाशीर्वादाभिधानवत्।।

चौथे महीने में बालक को जन्म के घर से सूर्य के दर्शन के निमित्त बाहर निकालना चाहिए और छठे महीने में अन्नप्राशन अर्थात् भोजन कराना चाहिए अथवा अपने कुलाचार के अनुसार जब उचित हो तब ऐसा करना चाहिए-

चतुर्थे मासि कर्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहात्।
षष्ठेऽन्नप्राशनं मासि यद्वेष्टं मङ्गलं कुले।।

सब द्विजातियों का ही मुण्डन संस्कार पहले अथवा तीसरे वर्ष में वेदानुकूल धर्मपूर्वक करना चाहिए-

चूडाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः।

प्रथमेऽब्दे तृतीये वा कर्तव्यं श्रुतिचोदनात्।।

गर्भ से आठवें वर्ष में ब्राह्मण का, गर्भ से ग्यारहवें वर्ष में क्षत्रिय का और बारहवें वर्ष में वैश्य का यज्ञोपवीत करना चाहिए-

गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनयनम्।

गर्भादेकादशे राज्ञो गर्भात्तु द्वादशे विशः।।

ब्रह्मतेज की इच्छा करने वाले ब्राह्मण का पाँचवें वर्ष में, बल की इच्छा करने वाले क्षत्रिय का छठे वर्ष में, चेष्टा की इच्छा करने वाले वैश्य का आठवें वर्ष में यज्ञोपवीत कर देना चाहिए-

ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्यं विप्रस्य पञ्चमे।

राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे।।

यथासमय संस्कार किये बिना ये ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य समय बीतने के पश्चात् सावित्री से पतित सज्जन पुरुषों में निन्दित व्रात्य हो जाते हैं-

अत ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः।

सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्यार्यविगर्हिताः।।

यज्ञोपवीत के समय ब्राह्मण की करधनी समान तीन धागे की मुञ्ज की और चिकनी बनानी चाहिए। क्षत्रिय मेखला जिसकी धनुष की प्रत्यञ्चा बनती है अर्थात् मूर्वातृण की बनानी चाहिए। वैश्य की सन के तन्तुओं की मेखला बनानी चाहिए-

मौञ्जी त्रिवृत्समा श्लक्ष्णा कार्या विप्रस्य मेखला।

क्षत्रियस्य तु मौर्वी ज्या वैश्यस्य शणतान्तवी।।

ब्राह्मण का यज्ञोपवीत कपास का बना, क्षत्रिय का सन के सूत का बना और वैश्य का भेड़ की ऊन के सूत का बना होना चाहिए, यह उपवीत दाहिनी ओर से बायीं ओर का बटा हुआ, और तीन लड़ों से तिगुना करके बना हुआ होना चाहिए-

कार्पासमुपवीतं स्याद्विप्रस्योर्ध्ववृतं त्रिवृत्।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

शणसूत्रमयं राज्ञो वैश्यस्याविकसौत्रिकम्।।

ब्राह्मण बेल या ढाक के, क्षत्रिय बड़ या खैर के, वैश्य पीपल या गूलर के दण्डों को धर्मतः नियमानुसार धारण कर सकते हैं-

ब्राह्मणो बैल्वपालाशौ क्षत्रियो वाटखादिरौ।

पैलवौदुम्बरौ वैश्यो दण्डानर्हन्ति धर्मतः।।

माप के अनुसार ब्राह्मण का दण्ड केशों तक, क्षत्रिय का माथे तक बनाना चाहिए और वैश्य का नाक तक ऊँचा होना चाहिए-

केशान्तिको ब्राह्मणस्य दण्डः कार्यः प्रमाणतः।

ललाटसंमितो राज्ञः स्यात्तु नासान्तिको विशः।।

सब दण्ड सीधे, बिना गाँठ वाले, देखने में प्रिय लगने वाले मनुष्यों को बुरे या डरावने न लगने वाले छालसहित और बिना जले-झुलसे होने चाहिए-

ऋजवस्ते तु सर्वे स्युरव्रणाः सौम्यदर्शनाः।

अनुद्वेगकरा नृणां सत्वचोऽनग्निदूषिताः।।

ईप्सित दण्ड को ग्रहण करके फिर सूर्य के सम्मुख स्थित होकर अग्नि की प्रदक्षिणा करके विधिपूर्वक भिक्षावृत्ति करनी चाहिए-

प्रतिगृह्येप्सितं दण्डमुपस्थाप्य च भास्करम्।

प्रदक्षिणं परीत्याग्निं चरेद्भैक्षं यथाविधिः।।

विद्यार्थी को सदा भोजन का सत्कार करना चाहिए। अन्न की निन्दा को त्याग कर उसका भक्षण करना चाहिए। भोजन को देखकर मन में उल्लास तथा प्रसन्नता का भाव रखना चाहिए। यह उच्चारण करना चाहिए कि यह अन्न हमको प्रतिदिन मिले-

पूजयेदशनं नित्यमद्याच्चैतदकुत्सयन्।

दृष्ट्वा हृष्येत्प्रसीदेच्च प्रतिनन्देच्च सर्वशः।।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

सदा पूजा हुआ अन्न बल और वीर्य को देता है और बिना पूजन किया हुआ वह अन्न खाने से इन दोनों अर्थात् बल और वीर्य को नष्ट कर देता है-

पूजितं ह्यशनं नित्यं बलमूर्जं च यच्छति।

अपूजितं तु तद्भुक्तमुभयं नाशयेददिदम्।।

किसी को भी जूठा भोजन नहीं देना चाहिए। दूसरे का उच्छिष्ट भोजन नहीं खाना चाहिए। बहुत भोजन भी नहीं करना चाहिए।जूठे मुँह कहीं नहीं जाना चाहिए-

नोच्छिष्टं कस्यचिद्द्यान्नाद्याच्चैव तथान्तरा।

न चैवात्यशनं कुर्यान्न चोच्छिष्टः क्वचिद्व्रजेत्।।

अधिक भोजन करना स्वास्थ्यनाशक, आयुनाशक, सुखनाशक, अहितकर और लोगों द्वारा निन्दित माना गया है। इसीलिए उस अधिक भोजन को छोड़ देना चाहिए-

अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चातिभोजनम्।

अपुण्यं लोकविद्विष्टं तस्मात्तत्परिवर्जयेत्।।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi